परमात्म ऊर्जा

स्व-चिंतन और शुभ चिंतक

सफलतामूर्त बनने के लिए मुख्य दो ही विशेषताएं चाहिए- एक प्युरिटी और दूसरी यूनिटी। अगर प्युरिटी की भी कमी है तो यूनिटी में भी कमी है। प्युरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत को नहीं कहा जाता, संकल्प, स्वभाव, संस्कार में भी प्युरिटी। मानों एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या या घृणा का संकल्प है; तो प्युरिटी नहीं, इम्प्युरिटी कहेंगे। प्युरिटी की परिभाषा में सर्व विकारों का अंश-मात्र तक न होना है। संकल्प में भी किसी प्रकार की इम्प्युरिटी न हो। आप बच्चे निमित्त बने हुए हो बहुत ऊंचे कार्य को सम्पन्न करने के लिए। निमित्त तो महारथी रूप से बने हुए हो ना। अगर लिस्ट निकालते हैं तो लिस्ट में भी सर्विसएबुल तथा सर्विस के निमित्त बने ब्रह्मा वत्स ही महारथी की लिस्ट में गिने हुए हैं। महारथी की विशेषता कहाँ तक आयी हुई है- सो तो हर-एक स्वयं जाने। महारथी जो लिस्ट में गिना जाता है वो आगे चल कर महारथी होगा अथवा वर्तमान की लिस्ट में महारथी है। तो इन दोनों बातों के ऊपर अटेन्शन चाहिए।

यूनिटी अर्थात् संस्कार-स्वभाव के मिलन की यूनिटी। कोई का संस्कार और स्वभाव न भी मिले तो भी कोशिश करके मिलाओ, यह है यूनिटी। सिर्फ संगठन को यूनिटी नहीं कहेंगे। सर्विसएबुल निमित्त बनी आत्माएं इन दो बातों के सिवाए बेहद की सर्विस के निमित्त नहीं बन सकती हैं, हद के हो सकते हैं। बेहद की सर्विस के लिए ये दोनों बातें चाहिए। सुनाया था ना- रास में ताल मिलाने पर ही होती है- वाह! वाह! तो यहाँ भी ताल मिलाना अर्थात् रास मिलाना है। इतनी आत्माएं जो नॉलेज वर्णन करती हैं तो सबके मुख से यह निकलता है- ये एक ही बात कहते हैं, इन सब का एक ही टॉपिक, एक ही शब्द है यह सब कहते हैं ना। इसी प्रकार स्वभाव और संस्कार एक-दो में मिलें, तब कहेंगे रास मिलाना।

हाथरस-उ.प्र.। नवरात्रि के अवसर पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी में जिला पंचायत अध्यक्षा सीमा उपाध्याय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता। साथ हैं ब्र.कु. भावना तथा अन्य।

जालंधर-पंजाब। बाढ़ से क्षतिग्रस्त स्थान पर राशन सामग्री की गाड़ी को रवाना करते हुए एडीसी अमनिंदर कौर बराड़ व ब्र.कु. संधीरा। साथ है ब्र.कु. विजय बहन तथा अन्य।

कथा सरिता

प्रतिबिम्ब

एक बार एक कुत्ता शीशों से भरे एक संग्रहालय में भागता हुआ आ गया। संग्रहालय अनोखा था; दीवारें, छत, दरवाज़े और यहाँ तक कि फर्श भी शीशों से बने थे। अपना प्रतिबिंब देखकर कुत्ता हॉल के बीचों-बीच आश्चर्य से ठिठक गया। उसे कुत्तों का एक पूरा झुंड ऊपर-नीचे, चारों तरफ से घेरे हुए दिखाई दे रहा था। कुत्ते ने दाँत दिखाए और भौंका, सभी प्रतिबिम्बों ने उसी तरह प्रतिक्रिया दी। डरकर कुत्ता उन्मत्त होकर भौंकने लगा; कुत्ते के प्रतिबिम्बों ने भी कुत्ते की नकल की और उसकी तीव्रता कई गुना बढ़ा दी। कुत्ता और भी ज़ोर से भौंका, लेकिन उसकी प्रतिध्वनि और भी तेज़ हो गई। कुत्ता एक तरफ से दूसरी तरफ उछल रहा था, जबकि उसके प्रतिबिम्ब भी इधर-उधर उछल रहे थे और अपने दाँत चटका रहे थे।

अगले दिन, संग्रहालय के सुरक्षाकर्मियों ने उस बेजान, लाचार कुत्ते को उसके हज़ारों प्रतिबिम्बों से घिरा हुआ पाया। कुत्ते को नुकसान पहुँचाने वाल कोई नहीं था। कुत्ता अपने ही प्रतिबिम्बों से लड़ते-लड़ते मर गया।

सीख- दुनिया अपने आप अच्छाई या बुराई नहीं लाती। हमारे आस-पास जो कुछ भी हो रहा है, वह हमारे विचारों, भावनाओं, इच्छाओं और कार्यों को दर्शाता है। दुनिया एक बड़ा आईना है। तो आइए, एक अच्छा पोज़ बनाएँ।

अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनें...

एक सफल युवा कार्यकारी अपनी नई जगुआर कार पड़ोस की गली में चला रहा था, तभी उसकी नज़र खड़ी कारों के बीच से एक बच्चे पर पड़ी जो तेज़ी से निकल रहा था। जैसे ही वह उसके पास पहुँचा, उसने अपनी गति थोड़ी धीमी कर ली, तभी एक ईंट उसकी कार के दरवाज़े से टकराई। उसने ज़ोर से ब्रेक लगाए और वापस उसी जगह पहुँच गया जहाँ ईंट मारी गई थी।

गुस्से से भरा आदमी अपनी कार से कूद पड़ा और पास खड़े बच्चे को चिल्लाते हुए पकड़ लिया, "ये सब क्या था? तुमने मेरी कार के साथ क्या किया? तुमने ऐसा क्यों किया?" वह छोटा लड़का थोड़ा डरा हुआ था, लेकिन बहुत विनम्र और क्षमाप्रार्थी था। "मुझे माफ करना, महोदय। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं और क्या करूँ," उसने विनती की। "मुझे ईंट फेंकनी पड़ी क्योंकि मेरी मदद के लिए पुकारने पर कोई और नहीं रुका।" आँसुओं से भरकर, उसने खड़ी कारों की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह मेरा भाई है, वह फुटपाथ से लुढ़ककर अपनी व्हीलचेयर से गिर गया है, और उसे बहुत चोट लगी है। मैं उसे उठा नहीं सकता।"

रोते हुए लड़के ने उस आदमी से पूछा, "क्या आप उसे वापस व्हीलचेयर पर बिठाने में मेरी मदद कर सकते हैं? उसे चोट लगी है, और वह मेरे लिए बहुत भारी है।" वह युवक भावुक हो गया और अपने

गले में तेज़ी से बढ़ती गांठ को निगलने की कोशिश करने लगा। फिर, उसने जल्दी से दूसरे बच्चे को उस जगह से उठाया और उसे वापस व्हीलचेयर पर बिठा दिया। उसने उस छोटे बच्चे को भी चोटों और कटों में मदद की।

जब उसे लगा कि सब ठीक हो जाएगा, तो वह अपनी कार में वापस चला गया। कृतज्ञ बालक ने कहा, "धन्यवाद, महोदय, और ईश्वर आपका भला करे।" युवक इतना घबरा गया था कि कुछ बोल ही नहीं पाया, इसलिए उसने उस छोटे लड़के को व्हीलचेयर पर बैठे अपने भाई को फुटपाथ पर धकेलते देखा। उस आदमी के घर वापस लौटने का सफर लंबा और धीमा था। जब वह कार से बाहर आया तो उसने अपनी कार के दरवाज़े पर लगे गड्ढे को देखा। नुकसान साफ दिखाई दे रहा था, लेकिन उसने उसे ठीक करवाने की ज़हमत नहीं उठाई। इसके बजाए, उसने उस गड्ढे को अपने पास रखा ताकि उसे यह संदेश याद रहे; "ज़िंदगी में इतनी तेज़ी से मत भागो कि किसी को तुम्हारा ध्यान खींचने के लिए तुम पर ईंट फेंकनी पड़े!"

शिक्षा- ज़िंदगी हमारी रूह में फुसफुसाती है और हमारे दिलों से बात करती है। कभी-कभी जब हम उसकी बात नहीं सुनते, तो वह हम पर ईंट फेंक देती है। हमारी मर्ज़ी है कि हम फुसफुसाहट सुनें या ईंट का इंतज़ार करें।

सुंदरनगर-हि.प्र.। नवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में चैतन्य देवियों के रूप में सुसज्जित मंडी सबज़ोन प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें। कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शिखा, ब्र.कु. तृप्ता, शहर के अन्य गणमान्य अतिथियों की व ब्रह्माकुमार भाई-बहनों भी उपस्थिति रही।

ब्रह्मपुर गिरी रोड-वाहडाझोला(ओडिशा)। नवरात्रि के अवसर पर आयोजित चैतन्य झांकी शुभारम्भ पश्चात् वाहडाझोला एनएसी के वाइस चेयरमैन परशुराम स्वांई को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी।